समकालीन कहानी में जन चेतना

डॉ.शशिकांत चंदेला
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय मेहंदवानी
जिला-डिंडोरी म. प्र.,भारत

यह सच है कि जिंदगी जब यातनामय बन जाए तो मानव का जीवन जीना दूभर हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में समकालीन कहानी आम जन की दयनीय स्तिथि व संवेदना का यथार्थ चित्रण तथा संघर्षमयी पीड़ा का प्रत्यक्ष अनुभव कर मानव जीवन को नये धरातल की ओर ले जाता है। जहाँ वेहताशा दौड़ते अजनवी चेहरे पर चेतना का नया बोध होता है। ओमप्रकाश गुप्ता मानव की संघर्षमयी चेतना की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं- "जनता का मनोबल बहुत ऊंचा है, अपनी सारी कठिनाइयों के बावजूद वह बड़ी बहादुरी से जूझ रही है, मैं जनता के इस वीर भाव से बहुत प्रभावित हूँ।"[1] जीवन साधना को साधने वाली समकालीन कहानी मानव चेतना की महाशक्ति है। जिसमें मानव का सारा जीवन उर्वर भूमि की तरह अंकुरित व पल्लवित होता हुआ दिखाई देता है। रामदरश मिश्र की कहानी 'एक औरत एक जिंदगी' के कुछ अंश मानव समाज की मानवीय चेतना को जीवन की यथार्थता के साथ खोजती है तथा मानव जीवन की हर धड़कन में मौजूद पाती है। जैसे- "भवानी ने बड़ा रूखा-सा जवाब दिया, हां, ठीक कहती हो, काकी जी। मैं पूजा पाठ में मन लगाऊं और ग़ॉव वाले

मेरी खेती बारी में मन लगावे और एक दिन पूजा से जागकर पाऊं कि मेरे सारे खेत पट्टीदारों के नाम हो गये हैं और मैं अपने दोनों बच्चों के लिये भिखारिन-सी रास्ते पर खड़ी हूँ। इससे उनकी आत्मा को शांति मिलेगी न ।

वर्तमान समय में मानव का जीवन अनेक विपदाओं और समस्याओं से घिरा हुआ है। इसी कारण उनका जीवन कभी उपहास और कभी विरोध का शिकार होता है। ऐसा माना जाता है कि- "नवीनता की अभ्यर्थना उपहास से शुरू होती है।"[3] इसका आशय मानव का जीवन वर्तमान समय में अत्यंत जटिल है। तब तो कहा गया है कि- "हमारे साहित्य को जनता के हृदय के साथ एक करने की आवश्यकता है जिससे वह सार्वजनिक जीवन से प्रेरित जनता की आत्मा के साथ जी सके।"[4]

आज के समय में समकालीन कहानी मानव जीवन की संघर्षमयी यथार्थ संवेदना को चित्रित करती है तथा उनकी यथास्थिति के साथ खड़े होकर एक क्रांतिकारी बदलाव के लिये तत्पर है तभी तो समकालीन कहानी मानव समाज की एक अभिन्न अंग है। जिसके कारण आम जन सरलतम जीवन को जी सकेगा- "बस उसके लिए एक ही रास्ता है, वह आत्मविश्वास और अपनी ईमानदारी में आस्था। इसी के बल पर शंका, संदेह, अनिश्चित्ता, अतार्किक जीवन, सब के बीच से वह अपनी कला के माध्यम से सहस्त्रों दु:ख-सुख के साथ मिलाकर जी सकता है।"[5]

समकालीन कहानी मानव चेतना को प्रभावित कर वास्तविक जीवन व समसामयिक वैचारिक कल्पना के प्रति आग्रही बनाती है। जो

मानव जीवन के लिए अत्यंत प्रासांगिक है। इस प्रकार समकालीन कहानी सामाजिक परिप्रेक्ष्य व संघर्षशीलता के साथ मानवीय जीवन प्रसंगों व संदर्भों को रेखांकित करती है जिससे मानव जीवन को जीने का आधार मिलता है, यही आधार मानवीय जीवन के विकारों को खत्म करते है तथा मानव जीवन यथार्थ के धरातल में जीने के लिए प्रयत्नशील है। इससे मानव समाज को अतीत के मोह से मुक्ति मिलती है। आध्यात्मवादी चेता ठीक ही कहते है- "एक मुट्ठी भर जौं का आंटे पर गुजारा करने वाले ये लोग दुनिया को हिला सकते है। इन्हें अगर आधी रोटी का टुकड़ा मिल जाय तो पूरा विश्व भी उनकी शक्ति को बांध नहीं पाएगा।"[6]

समकालीन कहानी मानव जीवन के प्रति प्रतिबद्ध है। आज जब मानव का दमन और शोषण चरम पर है तब समकलीन कहानी जीवन का आधार बनी। इतना ही नहीं अमानवीयता के खिलाफ जन सामान्य द्वारा किये जा रहे प्रतिरोध में, संघर्षों में अपना समर्थन और अपनी भागीदारी निश्चित करती है। जिसके कारण मानव जीवन व मानव समाज सही और क्रांतीकारी लक्ष्य की ओर उन्मुख होता है तभी तो समकालीन कहानी में मानव विकास के नये नये रास्ते और संभावनाओं के नये नये द्वार खोलते हुए प्रतीत होती है। यही मानव जीवन के अंतर्मन को और उनके स्वरूप को समझने का एक सार्थक प्रयास है। मानव और मानव जीवन के बीच रिश्तों को गहराई से व्यक्त करती है। इसीसे मानव जीवन की तस्वीर बदली। राजेंद्र यादव इस बदलते तस्वीर का एक चित्र खीचते हुए कह सके कि -"सन पचास और साठ के बीच की कहानियों में, जीवित परिवेश में सांस लेते,

व्यक्ति और व्यक्तित्व को बनाने और ढालने वाले सूत्रों की खोज ही अधिक दिखाई देता है।"[7] ऐसा ही कुछ एक बेरोजगार, देहाती नौजवान का हौसला जो शक्ति और साधन को बड़ी दृढता के साथ इस्तेमाल करता है। भले ही बहुत सड़ियल जीवन जिया है। लेकिन उसके अनुभव जनतंत्र के झूठ से मोहभंग का दस्तावेज बन जाते है। 'मुसइचा' कहानी के कुछ अंश को उदाहरण बतौर देख सकते हैं- "साथियो, मैं चीर घर से बाहर लाई हुई लाश की तरह हूँ जिसकी शिनाख्त नहीं हो सकी है। मुझे पहचानो, मैं तुम्हारे लिए, तुम सबके लिए षड़यंत्र का सबूत हो सकता हूँ जिसे जनतंत्र कहते हैं। जनतंत्र, इस समय जिसकी गर्दन मेरे घुटनों के ठीक सामने है। उसे गन्ने की तरह चूसकर फेंक दिया गया है। लेकिन वह 'आग की तरह' पूरी कर सकता है। यही उसकी सार्थकता है।"[8]

वर्त्तमान समय में समकालीन कहानी युग और समाज की जरुरतों और हलचलों के अनुरुप जनरुचि और जन अकांक्षाओं में परिवर्तन होती हुई समय-ज्ञान तथा विचारधारा और सार्वभौम सत्य की सार्थकता के साथ जीवन और जगत की समस्याओं के भीतर धंसने और उनका समाधान खोजती है। ऊषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' इसका यथार्थ दस्तावेज है- "उन अकेले क्षणों में उन्होनें इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था।"[9]

वर्त्तमान समय में मानव समाज का उत्थान जन चेतना की शक्ति के बिना संभव नही है। उनका साहस,आत्मविश्वास और

सफलता का साकार रूप समकालीन कहानीकार नासिरा शर्मा की कहानी 'पढ़ने का हक' में प्रतिपादित करती है। कहानी की मंजू अपने नागरिकता को जन्मजात होने का अधिकार मानती है- "इसलिए कि मंजु आजाद भारत की नागरिक है। उसको नागरिकता का अधिकार मिलना चाहिए। तुम रोटी कपडा देते हो क्योंकि मां बाप हो। मगर वह आजादी नहीं देना चाहते हो जो उसका जन्मजात अधिकार है।"[10] इसी संदर्भ में गोविंद मिश्र की 'कचकौंध' कहानी पठनीय है- "दिल्ली की किसी भी दिशा में चले जाओ, क्या आलीशान बिल्डिगें बनती जा रही हैं... सतमंजिला, अठमंजिला और वहीं निजामुद्दीन के पास देखो तो आदमी बाड़ों में रहते हैं...अंदर खड़े भी नहीं हो पाते। पानी बरसता होगा, तब क्या करते होंगे बेचारे? इससे अच्छे तो गांव में... कम-से-कम मुड़ी उठाने की जगह तो है।"[11]

मानव जीवन को किसी कसौटी पर कसना और उनके दंशों को सम्यक रूप से रूपायित करना समकालीन कहानी का वैशिष्ट्य है। क्योंकि यह कहानी मानव जीवन को जीने का नया राह बताती है तभी तो मानव अपना जीवन बड़े आनंद और उमंग के साथ जी पाता है। पूरी कर पाता है, जिंदगी की सार्थकता। समकालीन कहानी का प्रमुख उद्देश्य है- मानव और मानव के बीच सामंजस्य व समरसता पैदा करना। इससे मानव समाज को नूतनता का बोध होता है और चिर नूतन का संधान कर पाता है। जिसे आज समकालीन कहानी बड़े ही सहज रूप में व्यावहारिकता के साथ आत्मबोध कराती है। फिर मानव इसे बड़े गहराई के साथ समझता है और उसे अपने जीवन व्यवहार में समाहित करता है। परशुराम शुक्ल की 'मम्मी' कहानी के अंश मानव

जीवन की साधना को किस प्रकार से साधते है। देखिये- "स्वस्थ रहने के लिये जितना जरूरी उचित खान-पान है, उतना ही जरूरी है कोई व्यायाम करना और उतनी ही जरूरी है सही दिशा में सोचना। प्रेम का बर्ताव करना और उदार होना। छोटी-छोटी बातों को दरगुजर करना।"[12]

समकालीन कहानी मानव की करुणार्द्र अभिव्यक्ति, खोई अस्मिता व अस्तित्व की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील है। समकालीन कहानियों की ऐसी तत्परता मानव जीवन में यथार्थ बोध के साथ क्रांति की ज्वाला धधकाने की चेष्टा है। जिससे जीवन शिकायतों, संदेहों,उलझनों, भ्रमों आदि से मुक्त हो जाता है और क्रांतिकारी जन समुदाय को एक विशेष शिक्षा और शक्ति मिलती है। आम जन धैर्य और संचेतना से लैस होकर बुनियादी संघर्ष करता है। समकालीन कहानी व्यक्ति और समाज को वास्तविकता का बोध कराती है तथा आम जन में अपार शक्ति और विश्वास पैदा करती है। तब मानव की संघर्षमयी चेतना एक क्रांतिकारी शक्ति के रूप में फलीभूत होती है। 'वापसी' कहानी इसका सबल उदाहरण है- "एक तरकारी और चार पराठे बनाने में सारा डिब्बा घी उड़ेलकर रखा दिया। जरा-सा दर्द नहीं है, कमाने वाला हाड़ तोड़े और यहां चीजें लुटें। मुझे तो मालूम था कि यह सब काम किसी के बस का नहीं है।"[13] ऐसा ही कुछ अवधेश प्रधान के कथन में देखने को मिलता है- "जितना पवित्र हमारा जीवन होगा उतना ही शुद्ध हमारा साहित्य होगा। अमीरी प्रतिभा के लिये अनुकूल भूमि नहीं है। उसमें कुछ ऐसी बातें हैं जो गरीबी में ही फूल सकती है।"[14]

सत्य की शाश्वतता के साथ क्रांतिकारी संघर्ष करती हुई समकालीन कहानी मानव जीवन के भीतरी परतों को खोलती है। जिससे व्यापक जीवनानुभव और अनुभूतियों को आधार दे पाता है। यही आधार नये और पुराने के बीच बहुत हद तक सही-सही और उपयुक्त रिश्ता को लक्षित करता हैं। गोविंद मिश्र की कहानी के कुछ अंश देखिए– "अरे बेसहूरो, हमारे आचरण भी तुम्हारे जैसे होते तो तुम लोग कहां से बन जाते! देखो तो आठ आना बचाने के लिए रेल छोड़ रहे, दस मील पैदल तान देते थे। कोई काम ऐसा नहीं जो न किया हो। मड़ई है, बुरे समय की सोचकर चलता है। जब एक पेंट कमीज से गुजारा हो सकता है, तो पछत्तर की क्या जरूरत?"[15] ऊषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी के कुछ अंश भी ऐसा ही कुछ बयां करते हैं- "सभी खर्च तो वाजिब-वाजिब हैं, किसका पेट काटूं? यही जोड़-गांठ करते-करते बूढ़ी हो गई, न मन का पहना, न मन का ओढ़ा।"[16]

अतः मानव जीवन अपने असली स्वरूप में बेहद सरल और सहज तथा सादगी भरा है। इसलिए इस जीवन को बेहद जटिल बनाकर जीने के स्थान पर अत्यंत सरल और सहज भाव से जीना होगा । जीवन को बड़े प्रेम, प्रसन्नता और मस्ती से जीकर सार्थक बनाया जा सकता है। समकालीन कहानी की सबसे बड़ी शक्ति, संवेदना के नकली और सतही तेवर की जगह अनुभूत यथार्थ की भीतरी आवाज है। यही व्यक्त संवेदना पाठक को छूती और कचोटती रहती है तथा उस अनुभव में सहज रूप से सहभागी बनने को विवश करती है। जिसके कारण परिस्थिति और परिवेश के गहरे यथार्थ बिम्ब, मिट्टी में सने जीते-जागते यथार्थ चित्र और चरित्र आसपास ही उभरकर सामने

आते हैं। इस तरह जीवन से जूझने की अदम्य क्षमता हमें समकालीन कहानी से मिलती है और सुनिश्चित कर पाते है कर्तव्य बोध। अस्तु समकालीन कहानी जन चेतना परक विकास भी है और एहसास भी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्ता, डॉ. ओमप्रकाश : आधुनिक साहित्य, चिंतन के विविध आयाम, पृ.सं. 29, पार्श्व प्रकाशन निशा पोल, झवेरी बाड़, रिलीफ रोड, अहमदाबाद-380001*
2. *मिश्र, रामदरश : एक औरत एक जिंदगी, पृ.सं. 09, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016*
3. *प्रधान, डॉ. अवधेश : साहित्य और समय, पृ.सं. 99, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर, इलाहाबाद-211006*
4. *प्रधान, डॉ. अवधेश : साहित्य और समय, पृ.सं. 144, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर, इलाहाबाद-211006*
5. *प्रधान, डॉ. अवधेश : साहित्य और समय, पृ.सं. 126, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर, इलाहाबाद-211006*
6. *सिलाकारी, हरिवंश : उत्तर संवाद, अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 1993, पृ.सं. 79, रामकृष्ण प्रकाशन सावित्री सदन, तिलक चौंक विदिशा म. प्र. 464001*
7. *चंदेला, शशिकांत : समकालीन कहानी में नारी अस्मिता का अनुशीलन, पृ.सं. 28, शोध प्रबंध, रानी दुर्गावती विश्वाविद्यालय जबलपुर म. प्र.*
8. *प्रधान, डॉ. अवधेश : साहित्य और समय, पृ.सं. 36, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर, इलाहाबाद-211006*

9. *शर्मा, प्रो. शैलेंद्रकुमार : हिंदी कथा साहित्य, पृ.सं 62, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी रवींद्रनाथ टैगोर मार्ग, बांनगंगा, भोपाल म.प्र. 462003*

10. *शर्मा, नासिरा : पढ़ने का हक, पृ.सं. 07, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया प्लाट नं. 5, इंस्ट्रीच्यूशनल एरिया, फेज-2 बसंत कुंज, नई दिल्ली-110070*

11. *मिश्र, गोविंद : प्रतिनिधि कहानियां, पृ.सं. 13, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002*

12. *भ्रमर, राकेश : प्राची मासिक पत्रिका अंक 7 दिसम्बर 2010, पृ.सं. 46, प्रज्ञा प्रकाशन 24, जगदीशपुरम लखनऊ मार्ग, निकट त्रिपुला चौराहा, रायबरेली-229316*

13. *भ्रमर, राकेश : प्राची मासिक पत्रिका अंक 7 दिसम्बर 2010, पृ.सं. 66, प्रज्ञा प्रकाशन 24, जगदीशपुरम लखनऊ मार्ग, निकट त्रिपुला चौराहा, रायबरेली-22931*

14. *प्रधान, डॉ. अवधेश : साहित्य और समय, पृ.सं. 98, साहित्यवाणी 28, पुराना अल्लारपुर, इलाहाबाद-211006*

15. *मिश्र, गोविंद : प्रतिनिधि कहानियां, पृ.सं.15, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110002*

16. *शर्मा, प्रो. शैलेंद्रकुमार : हिंदी कथा साहित्य, पृ.सं. 66, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी रवींद्रनाथ टैगोर मार्ग, बांनगंगा, भोपाल म.प्र. 462003*